Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.researchambition.com Email: publish2017@gmail.com
Vol. 4, Issue-II
August 2019
Impact Factor : 5.936 (SJIF) *******
e-ISJN: A4372-3068

संस्कृत वाड्.मय में राष्ट्रीय एकता एवं लोक कल्याण की भावना

डॉ. आशीष कुमार
गुरू कॉगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार

सारांश

संस्कृत वाड्.मय भारतीय संस्कृति की धरोहर है। भारतीय संस्कृति में विद्यमान चार पुरुषार्थ से सभी मनुष्य जीवन में शनै–शनै आगे बढ़ते जाते है। इसी भारतीय संस्कृति में विद्यमान वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से सम्पूर्ण विश्व को जोडा है। ''समच्छध्व सवंदधम्'' के माध्यम से सम्पूर्ण जगत को एक नई प्रेरणा मिलती है। ''माता भूमिपुत्रोडह पृथिव्या'' के माध्यम से प्रकृति की रक्षा की जाती है। इस संस्कृत वाग्डमय के माध्यम से ''तेन त्यक्तेन भूञजीयाः'' ने सम्पूर्ण जगत को त्याग की भावना सिखलाई है। इन्ही वेदों में जन कल्याण तथा जनहित की कामना की गई है। वैदिक साहित्य हमें राष्ट्रीय एकता एवं अंखड़ता का पाठ सिखलाता है।

शब्द कुंजी– भारतीय संस्कृति, वसुधैव कुटुम्बकम्, संस्कृत भाषा, एकता।

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की धरोहर है। संस्कृत भाषा ही राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में सक्षम है। भारत प्राचीन काल से ही मूल्यों संस्कृतियों और सभ्यताओं का देश रहा है। भारतीय संस्कृति विश्वविख्यात है। क्योंकि संस्कृत साहित्य में कही भी 'मै' की कामना नही की गयी है। समस्त साहित्य में 'हम' का प्रयोग हुआ है। वैदिक एवं लौकिक, दोनो ही प्रकार के संस्कृत साहित्य में हमें राष्ट्र को एक धागे में बांधने के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्व संतु निरामया**'' की भावना सभी प्राणियों के मंगल की कामना की गयी है। भारतीय संस्कृत का लक्ष्य मानव का आध्यात्मिक उत्थान करता है। वेदों में मानव जीवन के आधारभूत कर्तव्यों को चार मुख्य भागों में विभाजित करने वाली विधा को चार पुरूषार्थ की संज्ञा दी गयी है।

धर्मार्थ काममोक्षाणां यस्मैकोऽपि न विधते।
अजागलस्तन्स्येव तस्य जन्म निरर्थकम।।.....(1)

वेदों में समस्त भारतभूमि को एक राष्ट्र माना गया है तथा उसे एक माता के रूप में स्वीकार किया है।

''माता भूमिः पुत्रो अहं प्रथिव्याः.....(2)

समस्त विश्व की कौटुम्बिकी एकता का बीज भी संस्कृत में ही दृष्टव्य है। वसुधैव कुटुम्बकम्'' वैदिक ऋषियों ने भी राष्ट्रीय एकता का उद्घोश किया जो ऋग्वेद के नदी सूक्त के मंत्र में भी राष्ट्रीय एकता की झलक दिखलाई देती है –

इमे में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोंग सचता परूश्ण्या।
असिकन्या मरूद्धये वितरस्तयाजीकीये वृणुद्दयासुर्वेमया।.....(3)

वैदिक कालीन साहित्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं दार्षनिक तत्वों का सुन्दर विवेचन किया गया है। वैदिक साहित्य में सत्य सिद्धान्तों के दर्शन होते है जो समस्त मानव जाति के उत्थान एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक है। वेद मानव के कर्तव्याकर्तव्य ज्ञान का आधार है।

यः कष्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।

स सर्वोऽभिहितों वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।। .....(4)

वैदिक कालीन समाज में जो भी कार्य किया जाता था उसमें कल्याण की भावना निहित रहती थी। कहीं भी ईर्ष्या और बैर नही था। ऋग्वेद के अग्नि सूक्त में अग्नि की स्तुति करते हुए कहा गया है –

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव

सचस्वा नः स्वस्त्ये।।.....(5)

प्रार्थना की गई हे अग्नि! तुम पुत्र के लिए पिता समान और हमारे लिए सुप्राप्य बनो तथा हमारे कल्याण के लिए हमेशा हमारे साथ रहो।

प्राचीन काल में मनुष्य के बीच गहरा सम्बन्ध था सभी और एकता की भावना विद्यमान थी। इस समय भी जब मनुष्य प्रकृति के साथ एकत्व की योजना बनाता है तो वह अपने को प्रकृति के भोग्या ही नही रह जाती, बल्कि जननी के रूप हमारे साथ रहती है। स्नेह और आवश्यक का प्रतीक बनती है। भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने संस्कृत भाषा ही सदैव मूलाधार बनी है। राष्ट्र की एकता को बनाये रखने के लिए व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का होना भी अत्यंत आवश्यक है। जिनका उल्लेख भी संस्कृत साहित्य विद्यमान है। भोगों में अनासक्त रखने की प्रेरणा हमें ईषावास्योपनिषद् के मंत्र द्वारा प्राप्त होती है।

''ईषावास्वमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा या गृधः कस्यस्विद् धनम्।।.....(6)

भोगों से अनासकत रहकर ही व्यक्ति राष्ट्र की सुरक्षा एवं हित के विषय में चिंतन कर सकता है। वही सत्य की भावना से युक्त मन वाला होता है। विश्व बंधुत्व की शिक्षा सर्वप्रथम वेदों से मिलती है। वेदों में जनकल्याण एवं जनहित की कामना की गई है। वैदिक साहित्य हमें राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का पाठ पढ़ाता है वेदों में कहा है कि –

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मैवा विजानतः।

कः षोकः एकत्वमनुपष्यतः तत्र का मोहः।। .....(7)

आज हमें विश्व में शान्ति एवं एकता स्थापित करने के लिए नैतिकता भावात्मक एकता अन्याय, पारस्परिक आत्म विश्वास एंव व्यक्तिगत स्वार्थ से उपर उठकर राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देना तथा राष्ट्रीयता की भावना को स्थापित करना होगा। उनके हृदय में एकत्व, अहिंसा, त्याग, दया, प्रेम, करूणा, मुदिता, सदाचार आदि भावनाओं को विकसित करना होगा। अपने हृदय में स्थित अनेकों संकीर्ण विचारधाराओं का परित्याग कर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की नीति पर चलकर एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सके।

अयं निजो परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। .....(8)

यही राष्ट्रीय भावना वैदिक ऋषियों की वाणी में सर्वत्र व्याप्त रही है। प्राणि वर्ग को सदैव अपने राष्ट्र की रक्षा एवं हित के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। कहा भी गया है –

समानी व आकृतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।.....(9)

जो व्यक्ति नित राष्ट्र के हित के लिए प्रयत्नशील रहता है, उसी का जीवन सफल है। वस्तुतः हमारे समाज का हर सुसंस्कृत व्यक्ति राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत रहता है। संस्कृत साहित्य में वैदिक काल से ही राष्ट्रीय एकता को घोतित करने वाले प्रसंग एवं उदाहरण उपलब्ध हैं –

ऊँ संगच्छध्वं संवदध्वम् स वो मनासि जानताम्।

देवा भागे यथा पूर्व संजानाना उपासते।। (10)

ऋषियों ने न केवल अपने लिए, अपितु समग्र राष्ट्र के हित एवं मंगल के लिए देवताओं की स्तुतियां की है। वैदिक ऋषियों का अनुशीलन करते हुए उनके आदर्श को अपनाए सबकी मन्त्रणा विचार और निर्णय सद्भावपूर्ण हो और एक समान सभी हृदय और चित्त एक जैसे सौमनस्यपूर्ण हो। सभी मानव एक सूत्र में बांधकर कल्याण मार्ग की ओर प्रवृत हो –

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।

इळस्पदे समिष्यसे स नो वसून्या भर।। (11)

इस प्रकार वेदविहित षिक्षाएं मानवीयता और समाजिकता से ओत–प्रोत होती हैं।

हमारा राष्ट्रवस्तुतः अनेकता में एकता का अनूठा उदाहरण है। यही कारण है कि आज हमारे भारत में अनेकों धर्मों एवं सम्प्रदायों के होते हुए भी राष्ट्रीय एकता पूर्ववत् अपने रूप में स्थिर है। संस्कृत भाषा द्वारा ही जनमानस के हृदय में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने वाले भावों को निहित किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने वाले जिन नैतिक मूल्यों का व्यक्ति के अंदर होना अनिवार्य है उनका वर्णन भी हमें संस्कृत साहित्य में ही प्राप्त होता है। संस्कृत सहित्य में वह सामर्थ्य है, जो व्यक्ति को अज्ञान से ज्ञान की और एवं अंधकार से प्रकाश की और ले जा सकता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्कन्येवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु आत्मानं ततो विजुगुप्सते।। (12)

अर्थात जो पुरूष समस्त प्राणियों को अपने में देखता है और अपने को सब प्राणियों में देखता है, वह किसी से द्वेष नही कर सकता। वेदों से लेकर आज तक प्राप्त संस्कृत साहित्य राष्ट्रीय एकता एवं उसकी रक्षा के लिए रचित है।

निष्कर्ष

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की धरोहर है। संस्कृत भाषा ही राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में सक्षम है। वेदों में मानव जीवन के आधारभूत कर्तव्यों को चार मुख्य भागों में विभाजित करने वाली विधा को चार पुरूषार्थ की संज्ञा दी गयी है। राष्ट्र की एकता को बनाये रखने के लिए व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का होना भी अत्यंत आवश्यक

है। जिनका उल्लेख भी संस्कृत साहित्य विद्यमान है। भोगों में अनासक्त रखने की प्रेरणा हमें ईषावास्योपनिषद् के मंत्र द्वारा प्राप्त होती है। वैदिक कालीन समाज में जो भी कार्य किया जाता था उसमें कल्याण की भावना निहित रहती थी। कहीं भी ईर्ष्या और बैर नही था। इस प्रकार वेदविहित शिक्षाएं मानवीयता और सामाजिकता से ओत–प्रोत इन शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारकर विश्व बन्धुत्व एवं कल्याण के रूप में स्थापित कर सकता है। तभी हमारा राष्ट्र एक स्वच्छ सुन्दर राष्ट्र बन सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. हितोपदेश श्लोक सं. 16
2. ऋग्वेद 10/08/15
3. ऋ0 10/75/5
4. मनुस्मृति – 2/7
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 10
6. ईशावास्यापनिषद् – 1
7. ईशावास्योपनिषद्– 7
8. वाग्वधूटीकाव्यम् – 6
9. अग्निसूक्त मंत्र – 6
10. संज्ञान सूक्त – 10/1191/1
11. ऋग्वेद – संज्ञान सूक्त 10/1191/1
12. ईशावास्योपनिषद् – 6

****